Research Inspiration
(Peer-reviewed, Open Access and indexed)
Journal home page: www.researchinspiration.com
ISSN: 2455-443X, Vol. 10, Issue-II, March 2025

नवगीत : एक समीक्षात्मक अध्ययन
(Navgeet: An Analytical Study)

Dr. Abha Gupta[a,*],

[a] *Assistant Professor (Hindi), Government Degree College, Jakhini, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi, Uttar Pradesh (India).*

KEYWORDS

नवगीत, युगबोध, गीत, परिवर्तन, नगरबोध, आधुनिकता

ABSTRACT

नवगीत एक संयुक्त पद है जो 'नव' और 'गीत' दो शब्दों से मिलकर बना है। इसका सीधा अर्थ तो नया गीत ही होगा, किन्तु जिस अर्थ में नवगीत शब्द प्रयुक्त होता है उसमें नव या नया का एक विशिष्ट अर्थ है। यहाँ नया का अर्थ–काल सम्बन्धी नयापन नहीं बल्कि गुण–धर्म सम्बन्धी नयापन है।' गीत' ही आगे चलकर 'नवगीत का रूप ले लेता है। 'नवगीत' में आंचलिकता के तत्व विद्यमान हैं, यह ज्यादातर गाँव की भाषा या लोकधुनों पर आधारित है। नवगीत युगबोध को राग एवं हार्दिकता के साथ व्यक्त करता है।

नवगीत का उद्भव और विकास समय सापेक्ष तथा हिन्दी कविता की विकासशील प्रक्रिया की आवश्यकताओं का प्रतिफल है। नवगीत गीत का स्वाभाविक विकास है। 'नवगीत' दो यौगिक शब्द से मिलकर बना है। पहला 'नव' अर्थात् नया दूसरा 'गीत' अर्थात् जिसमें गीति–तत्व पूर्णतः विद्यमान हो। ''स्वतंत्रता–प्राप्ति के पश्चात भारतीय जन–जीवन की आकांक्षाओं में हुए परिवर्तन का परिणाम था कि साहित्य के विविध–रूप, शिल्प, मुहावरे यहाँ तक कि कथ्यादि भी तेजी से बदले और नयी काव्य प्रवृतियों का उदय हुआ। बात यह है कि साहित्य और कला के गुणात्मक–परिवर्तन की दिशा सर्वदा सामाजिक–परिवर्तन की प्रक्रिया द्वारा निर्धारित होती है इसका आशय यह है कि यदि सामाजिक–परिवर्तन के वास्तविक अर्थ के समानान्तर है तब तो साहित्यिक–परिवर्तन वस्तुगत होगा यदि यह सामाजिक मांगों के तहत मात्र संशोधनमूलक है तो यह संरचना के सतह तक सीमित रह जायेगा। स्वतंत्रता आंदोलन के बढ़ते दवावों का परिणाम था कि छायावाद अपनी कलात्मक समृद्धि के बावजूद अप्रासंगिक सिद्ध हुआ और उसकी जगह, प्रगतिवाद ने ले ली। यह नयी गीत धारा विषय–वस्तु के क्षेत्र में प्रक्रियात्मक (छायावाद के सापेक्ष) शैली के क्षेत्र में नये रूप–विधान की पक्षधर थी। छायावाद के दो प्रमुख स्तम्भ निराला और पंत अपनी राह से अलग हटते दीखने लगे। इस क्रम में निराला के कुछ गीत, जिनमें जीवन की वास्तविकताओं और संघर्षो की प्रतिध्वनि थी प्रायः सबकी निगाह में आये।''[1]

सन् 1957 में श्रीकांत वर्मा ने 'कृति' के जरिए 'नवलेखन' की घोषणा की। डॉ० शिवप्रसाद ने इस वर्ष दो घटनाओं की ओर ध्यानाकृष्ट किया–राजनीति में आम चुनाव, साहित्य में इलाहाबाद का साहित्यकार सम्मेलन। किन्तु यहाँ 'नवलेखन' की घोषणा का जिंक्र नहीं था। वीरेन्द्र मिश्र ने 'नयी कविता नया गीत : मूल्यांकन की समस्याएँ शीर्षक आलेख पढ़ते हुए इस ओर सचेत किया था कि हिन्दी में नये गीत का जन्म हुआ है। यह नया गीत फॉर्म और कण्टेण्ट दोनों ही पक्षों में समृद्ध हुआ है। 'नवगीत' शब्द का प्रथम प्रयोग राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने सन् 1958 में

*** Corresponding author**
E-mail: abhagdc@gmail.com (Dr. Abha Gupta). https://orcid.org/0009-0000-7354-0639
DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v10n2.08
Received 25th Feb. 2025; Accepted 15th March 2025
Available online 30th March 2025
2455-443X /©2025 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

मुजफ्फर नगर से प्रकाशित 'गीतांगिनी' नामक पत्रिका में किया था।

गीत का जन्म मनुष्य के जन्म के साथ ही हो गया था। गीत मानवीय उद्‌गारों की अभिव्यक्ति का संगीतमय साधन बन गया। गीत से नवगीत तक की यात्रा में विशेष विचाराधारा अथवा किसी विशेष आन्दोलन की आहट नहीं सुनाई देती है। इस संदर्भ में माधव कौशिक लिखते हैं– ''आधुनिक हिन्दी काव्य की शक्तिशाली काव्य विधा के रूप में प्रतिष्ठित नवगीत का ऐतिहासिक विकास क्रम अत्यंत रोचक तथा बहुआयामी है सच तो यह है कि कविता ने जाने कितने रूप बदले किस–किस मोड़ से गुजरी, कितने नामों से पुकारी गयी। मगर कविता ही साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्रभावशाली विधा रही, जिसके माध्यम से प्रत्येक युग ने अपनी कथा, अपनी व्यथा, अपने सपने तथा आशा–निराशा की तमाम गहन भावनाओं को 'अत्यन्त मार्मिकता से अभिव्यक्त किया। असंख्य काव्यान्दोलनों से शक्ति ग्रहण करती हुई कविता अजस्त्र धारा निरन्तर, अविराम व अबाध गति से बहती रही है।''[2] नवगीत भारतीयता से जुड़ी तथा वैज्ञानिक समझ से दक्ष आधुनिक मानव का गीत है। वैदिक काल से ही गीत रूप में गेय पदों प्रयोग किया जाता है। गीत से नवगीत के उन्मेष में किसी परंपरागत विचारधारा का समर्थन नहीं रहा है किंतु समय के साथ गीतों ने 'अपनी शैली एवं शब्दों में बदलाव ग्रहण किया। यह बदलाव भाषिक स्तर पर भी हुआ।

नवगीत के दौर में 'नयी कविता' अपने पूर्ण प्रभाव में हमारे समझ थी। जिससे नयी कविता तथा नवगीत का परस्पर संबंध एक माना जाने लगा। क्योंकि नयी कविता–का आधुनिकता भावबोध इसमें परिलक्षित होने लगा। युगबोध की अभिव्यक्ति के लिए कुछ आलोचकों ने दोनों की संयुक्ति की अनिवार्यता पर बल दिया हैं। भवानी प्रसाद मिश्र की दृष्टि में ''कविता और नयी कविता, गीत और नवगीत एक दूसरे विरोधी नहीं, एक दूसरे के पूरक पूरक है, एक दूसरे के सहायक है और सम्भव है कि नयी कविता और नये गीत अब तक की कविता और अब तक के गीत से आगे बढ़ने की बैसाखियाँ भी है।''[3] नवगीत कोई बाहर से अपनायी साहित्यिक प्रवृत्ति नहीं है। यह वैदिक काल से भारतीय परंपरा में निहित है जिसे समय के साथ उभारा गया है। ''नवगीत समकालीन हिन्दी कविता की वह धारा है जो पाश्चात्य साहित्य की फैशनेबल प्रवृत्तियों से अलग रहकर और तथाकथित आधुनिकता के अंध प्रवाह में प्रवाहित हुए बिना भारतीय साहित्य की परंपरा से जुड़ा रहा है, और इसी कारण जनमानस में उसने अपने लिए स्थान बना लिया है। जो समकालीन हिन्दी कविता की किसी अन्य प्रवृत्ति को नहीं प्राप्त है।''[4] नवगीत का स्वरूप लोक–जीवन पर आधारित रहा है जिसमें मानव जाति के जीवन का लगभग प्रत्येक पहल नवगीत के स्वरूप का निर्माण करता है। 'नवगीत' के स्वरूप एवं विकास को क्रमशः हम तीन चरणों में विभाजित करके देख सकते हैं। प्रथम चरण में आजादी के चार–पाँच वर्षों बाद के मोहभंग, निराशा, घुटन आदि के बीज गीत–काव्य में पनपने लगी थी। इन स्थितियों से उबरने की आशा हर नव गीतकार के गीतों में झलकती है। केदारनाथ सिंह ने अपने परिवर्तित परिवेश का साक्षात्कार इस प्रकार कराया है

'' वो बरगद पर बादल की पातों की शाम
वो चौखट, वो चुल्हे से थापों की शाम
वो पहलू में किस्से के थापों की शाम
वो सपनों के घोड़े तो टापों की शाम
वो नये–नये सपनों की बेच दी है
भाई शाम बेच दी है, मैंने शाम बेच दी है,

'इस चरण में नवगीतकारों की सौन्दर्य–दृष्टि पूर्वा पेक्षया अधिक वस्तुगत और लोकधर्मी हुई। उसमें पारिवारिक परिवेश विकसित होने लगा मनोरम कल्पना की जगह जीवन्त बिम्बों ने ली–

'आँचल से छू तुलसी की थाली

दीदी ने घर की ढिबरी बाली
जमुहाई ले लेकर उजियाली
जा बैठी ताखों में
घर भर के बच्चों की आँखों में
धीरे–धीरे उतरी शाम! (धर्मवीर भारती)

नवगीत को नये भावबोध और नयी शिल्प–संहिता से जोड़ने में आंचलिकता की विशिष्ट भूमिका सिद्ध हुई। प्रकृति और लोकगीत की सम्बन्धों को समझा गया। केदार ने बादलों का आत्मीयतापूर्ण आहवान किया

''धान उगेंगे कि प्रान उगेंगे हमारे खेत में
आना जी बादल जरूर
चंद्रा को बाँधेगी कलगियाँ
सूरज को सूखी रेत
आना जी बादल जरूर।'' (केदारनाथ सिंह)

प्रथम दशक में नवगीत का स्वर विशेषतः नवरोमानी, लोकगीतात्मक और आंचलिक तरोताजगी से परिपूर्ण है। इस चरण के नवगीतकारों में शम्भूनाथ सिंह, वीरेन्द्र मिश्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, रवीन्द्र भ्रमर रामदरश मिश्र आदि प्रमुख हैं

द्वितीय चरण का नवगीतकार यह अनुभव करने लगा कि व्यवस्था के दमन चक्र में वह पिसता जा रहा है उसके सुरक्षा और सम्मान के वादे खोखले हैं। लोकतंत्र में उसका अस्तित्व संकटग्रस्त है। नवगीतकारों ने इस युगबोध को नगरबोध के माध्यम से मुखरित किया है। इसके पीछे एक कारण यह था कि विश्व–साहित्य में आधुनिकता–नागरिक संदर्भों के जरिये ही अभिव्यक्त हुई थी। पहले चरण के नवगीत में नगर–बोध का किन्तु सूक्ष्म रूप ने, पर दूसरे चरण में यह उसकी मुख्य प्रवृत्ति बन गया–

शहर हो गये।
सारे गुलमोहर, अमलतास
भीड़ महानगर हो गये/सुबहे जागी/जली
अगीठियाँ
धुआँ पहनने लगे मकान
चीखों से भर गई दिशाएँ
शोर पहन/सुन्न हुए कान
सोये कमरे। उठकर, सफर हो गये।

(माहेश्वरी तिवारी)

इस चरण में नगर–बोध के साथ–साथ ग्राम–बोध भी परिवर्तित हुआ अब वह गाँवों के चित्रण द्वारा अपने युग यथार्थ को परिभाषित करने में जुटा, जहाँ उसे आँगन देहली, दीवार, होरी, झूला सब अंधेरे में डूबे हुए मिले–

सहमा है आँगना
नागिन हर एक निशा है
देहली ना लाँघना
× × × × ×
कच्ची दीवारों के बीच/पानी है भर रहा
मन की मीनारों के बीच/अँधियारा झर रहा
लोरी को नेह झूलना
हिलता है जागना। (वीरेन्द्र मिश्र)

'गृहरति' इस चरण के नवगीत की एक मुख्य प्रवृत्ति है। वह सौन्दर्य विधायक की नयी शैली है। इस शैली में रचनाकार स्मृति बिम्बों के सहारे अतीत की कल्पना में डूबकर वर्तमान जीवन की विसंगतियों की ओर संकेत करता है।

हिन्दी नवगीत का तृतीय चरण राजनीतिक परिवर्तन और आन्दोलनात्मक वातावरण के मध्य उसके प्रवृत्तिगत ठहराव का काल है। इस चरण के प्रारम्भ में वांग्लादेश का प्रादुर्भाव एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिससे भारतीय राजनीति एक बार फिर विशेष रूप से प्रभावित हुई। इन्दिरा शासन की कमजोर होती हुई नींव फिर से मजबूत हुई और किसान आन्दोलन के सकारात्मक परिणामों को गहरा धक्का लगा। कविता के क्षेत्र में वाम कविता का उदय हुआ तथा प्रगतिशील काव्यधारा पुनः पुनरुत्थान की ओर अग्रसर हुई।

फलतः आपातकाल की घोषणा कर सरकार ने ''लोकतन्त्र

का नाश किया, प्रेस का मुँह बाँध दिया, जजों पर दबाव डाला, हजारों लोगों को बिना मुकदमे जेल में ठूसा, गलत मुकदमे बनाये उनके घरों और दुकानों पर छापे डाले और एक ऐसा वातावरण पैदा कर दिया जिसमें चन्द लोग कानून और संविधान को तोड़–फोड़कर अपनी मनमानी कर रहे थे।''[5] कि इस चरण के आरम्भ में नचिकेता ने नवगीतकारों को स्वतंत्र मंच प्रदान करने के उद्देश्य से 'अन्तराल' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। यह वार्षिक पत्रिका चार वर्षो तक निकली। मुजफ्फरपुर से प्रकाशित पत्रिका 'आईना' (सं०–राजेन्द्र प्रसाद सिंह) और वीरेन्द्र मिश्र द्वारा सम्पादित 'सांध्य मित्रा 'पत्रिका में नवगीतों को प्रमुखता मिली। वाराणसी की साहित्यिक– मासिक पत्रिका 'आर्यकल्प (सं.–अवधेश नारायण मिश्र) ने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'' की अपनी उदघोषणा के बीच नवगीत–सम्बन्धी–आलेखों और लघु टिप्पणियों का अनवरत प्रकाशन कर गीत विधा के उत्कर्ष हेतु अपना प्रयास जारी रखा ''इस चरण के नवगीत का सर्वाधिक उल्लेखनीय पक्ष उसमें सामाजिक सन्दर्भों को उभारा जाना है। अब इसमें दैनिक जीवन की समस्याओं संघर्षो, हड़तालों, राजनैतिक षड्यन्त्रों एवं नौकरशाही के विविध अत्याचारों का चित्रण मुखर हो उठता है। उधर इस चरण के नवगीतों के समानान्तर जनवादी गीतों के विद्रोही स्वर भी सुनने को मिलते है जिनमें आलोचनात्मक और व्यंग्य की जगह अभिधात्मक नारेबाजी ने ले ली है। इससे और बढ़कर जब समकालीन साहित्यिक–व्यक्तित्व पर ध्यान दें तो पता लगता है कि नवगीत का इस प्रकार मुखर हो जाना कतई आकस्मिक नहीं है।[6] ''आपातकाल की घोषणा के बाद उसके स्वर में जो आक्रोश है वह दूसरी आजादी की छटपटाहट से सन्दर्भित है।

कितनी बड़ी बाजार मैना री
हम–तुम इस पिंजरे में
पहली बार/पहली बोर/मैना री'' (अनूप अशेष),

व्याय प्रणाली के अन्तर्गत लचर न्याय व्यवस्था को कुपरिणामों को भी नवगीतकारों ने उजागर किया–

'देते रहे। नई तारीखें
लटके, हुए कैलेंडर/कीलों के''
ढीले मुन्शी/सुस्त वकीलों के!

(कृष्ण वक्षी)

निष्कर्षतः नवगीतों में ग्राम के प्रति अनुराग और शहरी विसंगतियों के गीत गाने में आधुनिक जीवन की वास्तविक समस्याएं छूटती गयीं। इस प्रकार अस्तित्ववादी प्रवृत्तियों का प्रसार हुआ और कुण्ठा, संत्रास, अजनबियत, अनास्था, ऊब, घुटन, पारिवारिक घुटन आदि का आस्फालन तेज हो गया। ऐसे में कतिपय नवगीतकारों के गीत में रो रोमैंटिकता का स्वर उभरा कलात्मकता की दृष्टि से नवगीत का विकास देखा गया। बिम्बों को पारदर्शी बनाने और भाषा को तराशने का उल्लेखनीय प्रयास इस चरण के नवगीतों में देखा जाता है।

सन्दर्भ सूची–

1. मिश्र, अ. ना. (त.नि.). हिन्दी नवगीत का संक्षिप्त इतिहास (पृ. 9)।
2. कौशिक, म. (त.नि.). नवगीत की विकास यात्रा (पृ. 1)। हरियाणा साहित्य अकादमी।
3. मिश्र, भ. प्र. (त.नि.). गीत दृ अभी पंख देते हैं (पृ. 36)।
4. शर्मा, स. (त.नि.). नवगीत के प्रतिमान और आयाम (मुख्य पृष्ठ)।
5. (1577, जूनदृजुलाई)। रविवार, पृ. 6।
6. मिश्र, अ. ना. (त.नि.). हिन्दी नवगीत का संक्षिप्त इतिहास (पृ. 61)।